लोक सभा

मंगलवार, 20 फरवरी, 2001/1 फाल्गुन, 1922 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न ग्यारह बजे समवेत हुई।

(**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*)

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मुझे सभा को हमारे एक सम्मानित सहयोगी, श्री इन्द्रजीत गुप्त के दुःखद निधन की सूचना देनी है श्री इन्द्रजीत गुप्त वर्तमान लोक सभा के सदस्य थे और उन्होंने पश्चिम बंगाल के मिदनापुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। इससे पूर्व उन्होंने वर्ष 1960 से 1967 तक दूसरी और तीसरी लोक सभा में पश्चिम बंगाल के कलकत्ता दक्षिण–पश्चिम; वर्ष 1967 से 1977 तक चौथी और पांचवीं लोक सभा में अलीपुर, वर्ष 1980 से 1989 तक सातवीं और आठवीं लोक सभा में बसीरहाट, वर्ष 1989 से 1999 तक नौवीं से बारहवीं लोक सभा में मिदनापुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किया। सबसे वरिष्ठ सदस्य होने के नाते श्री गुप्त प्यार से "सभा के पिता" के रूप में जाने जाते थे।

एक कुशल प्रशासक श्री गुप्त ने वर्ष 1996 से 1998 तक केन्द्रीय मंत्रीपरिषद में गृह मंत्री के रूप में सेवा की।

एक जाने माने और संसदविद श्री गुप्त, 1995–96 के दौरान रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति के सभापति रहे और 1999 से अब तक अधीनस्थ विधान संबंधी समिति के सभापति थे। वह विभिन्न संसदीय समितियों के सदस्य भी रहे, जैसे वर्ष 1990–91 के दौरान नियम समिति, 1985–1989 के दौरान और 1998 से सामान्य प्रयोजनों संबंधी समिति, 1998–2000 के दौरान रक्षा संबंधी समिति; 1986–1987 के दौरान याचिका समिति, 1986–87 और 1989 के दौरान कार्य मंत्रणा समिति; 1990–91 के दौरान ग्रंथालय समिति; 1990 के दौरान लोक सभा सचिवालय नियम, 1955 की समीक्षा संबंधी समिति।

एक लोकप्रिय मजदूर संघ नेता श्री गुप्त ने विभिन्न मजदूर संघों का प्रतिनिधित्व किया और श्रमिकों के समक्ष आने वाली समस्याओं को उजागर करने में कोई समय नहीं गंवाया।

श्री गुप्त एक विद्वान थे। उनकी दो पुस्तकें "कैपीटल एंड लेबर इन द जूट इंडस्ट्री" और "सैल्फ रिलायंस इन नैशनल डिफैंस" प्रकाशित हुईं। अनेक देशों की यात्रा करने वाले श्री गुप्त 1975 में लंदन में आईपीयू सम्मेलन में और 1976 में मैड्रिड में भारतीय संसदीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य रहे। वह 1990 में नामीबिया में प्रधान मंत्री के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य भी थे।

एक कुशल और सक्रिय संसदविद्, श्री इन्द्रजीत गुप्त को 1922 में 'उत्कृष्ट सांसद' के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री इन्द्रजीत गुप्त का निधन थोड़े दिन बीमार रहने के बाद आज प्रातः कोलकाता में 81 वर्ष की आयु में हो गया।

हम इस सम्मानित मित्र के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि यह सभा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवदेना व्यक्त करने में मेरे साथ है।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, एक और साथी, सहयोगी मित्र और संसद में जो दिग्गज के रूप में पहचाने जाते थे, हमारे बीच में से उठ गए हैं। 1960 से मैंने उन्हें संसद के सदस्य के रूप में देखा। वह अपनी पार्टी की विचारधारा से पूरी तरह प्रतिबद्ध थे, लेकिन अपने विचारों को शालीन भाषा में रखते थे, तर्क उपस्थित करते थे। उनके साथ मतभेद थे लेकिन उनका व्यक्तित्व सब के लिए आकर्षक था। उनके व्यक्तित्व में दृढ़ता थी, विचारों के प्रति प्रतिबद्धता थी, पारदर्शी प्रामाणिकता थी। लगातार संसद के सदस्य के नाते वह जहां विचारों को व्यक्त करते रहे, वहां संकट के समय आम सहमति बनाने में उनका बड़ा योगदान था। वह ट्रेड यूनियन आंदोलन से संबंधित थे, उसी के माध्यम से राजनीति में आए। उन्होंने मजूदरों के हितों की रक्षा के लिए निरंतर प्रयास किया। भारत में, भारत के बाहर वह श्रम हितों का प्रतिनिधित्व करते थे और निरंतर चिंता में रहते थे कि देश की समस्याएं किस तरह से हल हों और किस तरह से दलितों की, शोषितों की स्थिति में सुधार हो। उनकी उपस्थिति एक प्रेरणा देती थी। संसद के शोर–शराबे में वह अलग नहीं रह सकते थे लेकिन उसमें भी अपनी एक मर्यादा बनाए रखते थे। हम सबके उनके साथ बहुत अच्छे संबंध थे। आज उनके निधन से लोक सभा की अपार क्षति हुई है। जैसा मैंने कहा कि वह एक दिग्गज थे और आज एक दिग्गज हमारे बीच में से उठ गया है। मैं उनके प्रति अपनी ओर से, अपनी सरकार की ओर से, दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करूंगा कि उनके परिवार तक हमारी संवेदनाएं पहुंचा दें।